

THE GILLETTE COMPANY SAGA

GILLETTE UNFORGETTABLE MEMORY



— KING OF MEMORY —

FERDINANDO FREGA

जिलेट अविस्मरणीय स्मृति

कोई नहीं जानता था कि मैं क्या बना सकता हूँ।

मैं इंजीनियर नहीं हूँ। आर्किटेक्ट नहीं। बिल्डर नहीं। ज़्यादा से ज़्यादा, मैं बस एक फ्रीमेसन हूँ — एक शागिर्द, जिसमें 61 की उम्र में सीखने की भूख है।

जब आप इस गाथा को पढ़ना शुरू करेंगे, बीच से, तो आप में से ज़्यादातर सोचेंगे कि यह जिलेट के बारे में है। एक करियर के बारे में। शायद किसी पूर्व मैनेजर की आत्मकथा भी।

आप ग़लत होंगे।

जो भी पढ़ेगा, उसे सिर्फ़ सतह दिखेगी।

यह गाथा ब्लेडों के बारे में नहीं है।

यह निगमों के बारे में नहीं है।

यह मैनेजमेंट के बारे में नहीं है।

यह कामयाबी के बारे में भी नहीं है।

यह स्मृति के बारे में है।

क्योंकि जो कुछ हम देखते हैं, उसका मिट जाना तय है।

कंपनियाँ बदलती हैं।

बाज़ार बदलते हैं।

तकनीकें बदलती हैं।

लोग बूढ़े होते हैं।

घर ख़ाली होते हैं।

तस्वीरें धुँधला जाती हैं।

दस्तावेज़ भुला दिए जाते हैं।

नाम भी धूल हो जाते हैं।

स्मृति अकेली चीज़ है जो लड़ती रहती है।

विस्मृति के खिलाफ़ लिखी गई हर किताब प्रतिरोध का एक कर्म है।

बचाकर रखी गई हर याद समय पर एक जीत है।

सुनाई गई हर कहानी एक सीधा-सा एलान है:

“यह था।”

इसीलिए द जिलेट कंपनी गाथा का जन्म हुआ।

बेचने के लिए नहीं।

क्रायल करने के लिए नहीं।

कोई बाज़ार जीतने के लिए नहीं।

बल्कि इसलिए कि लोग, जगहें, रिश्ते और ज्ञान बिना कोई निशान छोड़े ग़ायब न हो जाएँ।

एक दिन, किसी को रैंकिंग याद नहीं रहेंगी।

किसी को एल्गोरिदम याद नहीं रहेंगे।

किसी को याद नहीं रहेगा कि हर महीने कितने लोग आते थे।

लगभग सारे आँकड़े मर चुके होंगे।

पर एक सच्ची स्मृति तब भी पीढ़ियाँ पार कर सकती है।

शायद कोई पोता।

शायद कोई अजनबी।

शायद कोई जो अभी पैदा नहीं हुआ।

वह एक पन्ना खोलेगा।

एक वाक्य पढ़ेगा।

और जानेगा कि किसी ने, बहुत पहले, एक निशान छोड़ने का फैसला किया था।

कोई स्मारक नहीं।

कोई साम्राज्य नहीं।

कोई मूर्ति नहीं।

एक स्मृति।

क्योंकि इंसान ताक़त के सहारे नहीं बचते।

वे कहानियों के सहारे बचते हैं।

और कहानियाँ तभी बचती हैं जब कोई उनकी रखवाली करने का फैसला करता है।

इसीलिए इस राजा के पास कोई तख़्त नहीं है।

कोई फ़ौज नहीं।

कोई राज्य नहीं।

उसका इलाक़ा स्मृति है।

उसकी सरहदें यादें हैं।

उसके शहर कहानियाँ हैं।

उसकी प्रजा वे सब लोग हैं जो भुला दिए जाने से इनकार करते हैं।

जिलेट गाथा के अंत में, कोई आदमी नहीं बचता।

कोई ब्रांड नहीं बचता।

एक उपनाम तक नहीं।

बस एक सवाल बचता है:

जब बाक़ी सब मिट जाए, तब बचाए रखने लायक़ क्या है?

पूरी गाथा इसी सवाल का जवाब देने के लिए है।

एक बार में एक पन्ना।

एक बार में एक ज़िंदगी।

एक बार में एक स्मृति।

स्मृति का राजा

क्योंकि सब कुछ गुज़र जाता है। स्मृति रह जाती है।

फर्दिनांदो